यीशु ने अपने प्रथम अनुयायी बुलाए

बच्चों को सिखाएं, यीशु का अनुयायी होना आनन्ददायक बात है।

सीखने वाली ऐसी गतिविधि चुनें जो बच्चों की आयु व आश्यकतानुसार हो।

प्रार्थना : "हे प्रभु, बच्चों की सहायता कीजिए कि वे विषय में सुसमाचारों से बता सकें।"

स्वयं को तैयार कीजिए कि यीशु द्वारा प्रथम शिष्यों को बुलाए जाने की कहानी सिखा सकें। पढ़ें मत्ती 4:18-22, यह अंश बताता है कि किस प्रकार यीशु अपने चेलों को चुनते हैं ताकि वे उनके कार्य को आगे बढ़ा सकें और सुसमाचार को संसार में फैला सकें।

कोई बड़ा बालक या अध्यापक इस कहानी को मुखाग्र सुनाए या पढ़े। फिर ये प्रश्न पूछे जाएं। (उत्तर साथ में दिए जा रहे हैं)

- पतरस और अन्द्रियास जब बुलाए गए तो क्या कर रहे थे? (पद 18 देखें)
- यदि वे उसके पीछे चलें तो यीशु ने उन्हें क्या बनाने को कहा? (पद 19)
- कितनी जल्दी दोनों ने यीशु के पीछे चलना आरम्भ किया? (पद 20)
- दो और कौन से शिष्य मछुवे थे? (पद 21)
- जब तुरन्त वे दोनों यीशु के पीछे हो लिए तो किसे नाव पर पीछे छोड़ दिया? (पद 22)

मत्ती 10:2-4 में लिखित यीशु के 12 चेलों के नाम याद करें।

प्रथम शिष्यों की बुलाहट से संबंधित एक नाटक प्रस्तुत कीजिए।

- आराधना सभा के अगुवे के सहयोग से बच्चों के लिए नाटक प्रस्तुत करने का प्रबंध कीजिए।
- बड़े बच्चे छोटे बच्चों की सहायता करें।
- बड़े बच्चे और युवक ये भूमिकाएं करें : यीशु शिमौन पतरस, अन्द्रियास, उद्घोषक जो कहानी का सारांश बता सके तथा बच्चों को स्मरण करा सके कि किसे क्या कहना और करना है।
- छोटे बच्चे याकूब, यूहन्ना, ज़ब्दी और उनके पिता, एवं मछुवों की भूमिका करें। जाल व नाव आदि के लिए कुर्सी व स्टूल को उल्टा रखकर प्रयोग किया जा सकता है।

उद्घोषक : कहानी का प्रथम भाग बताए। फिर यह कहें, 'सुनें कि शिमोन ने अन्द्रियास से क्या कहा...'

शिमोन : (नाव में बैठे हुए) अन्द्रियास देखो, वह रहा यीशु नासरी, जो लोगों को चंगाई देता है, जो वह शिक्षा देता है, मैं पसन्द करता हूं, पर वह तो इतना भला और विशेष जन है कि हम तो कुछ नहीं हैं कि वह हम पर दृष्टि करे।''

अन्द्रियास : हां, शिमोन यीशु तो इतना श्रेष्ठ शिक्षक है कि उसे हम जैसे साधारण व्यक्तियों की कोई आवश्यकता नहीं।

यीशु : शिमोन और अन्द्रियास! आओ मेरे पीछे हो लो! तुम मेरी सहायता कर सकोगे जबकि मैं मनुष्यों को पकड़ूंगा।

शिमोन व अन्द्रियास : कूदते हुए अपने जाल फैंक दें और यीशु के निकट पहुंचे।

यीशु : यूहन्ना और याकूब! तुम दोनों भी आकर मेरे पीछे हो लो।

यूहन्ना व याकूब : कूदते हैं और यीशु के पास चले जाते हैं।

ज़ब्दी : उन्होंने मुझे छोड़ दिया, अपने पिता को छोड़ दिया, ताकि सारा काम करता रहे, ठीक है, मैं सोचता हूं सब कुछ अच्छा होगा।

अन्य मछुवे : जब नाटक आरम्भ हो तो ज़मीन पर बैठे रहें। जब ज़ब्दी बोलता है, तो खड़ हो जाएं और यूहन्ना तथा याकूब की ओर संकेत करें, और कुछ इस प्रकार कहें, कैसे मूर्ख हैं, अपनी नावों को छोड़ दिया, अपनी अच्छी कमाई को छोड़कर उस शिक्षक के पीछे चले गए।

उद्घोषक : जब नाटक खत्म हो जाये, तो उन सारे लोगों का धन्यवाद करना जिन्होने इसमे मदद की है।

प्रश्न: अगर बच्चो ने इस नाटक को बड़ो के सामने प्रस्तुत किया, तो वे बड़ो से नीचे दिये गये प्रश्न पूछे

एक मछली का **चित्र** बनाके बच्चो से भी बनवाएं।

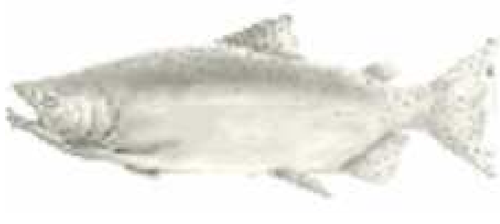

- शायद बड़े बच्चे एक नाव को बनाना पसन्द करेंगे

- आराधना सभा में बच्चे अपने चित्र युवकों को दिखाएं और चित्र क्या बताता है यह समझाएं कि किस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्यों के मछवे बनाकर नया काम दिया है।

बच्चों से कहें कि वे और उदाहरण प्रस्तुत करें जो यह स्पष्ट करे कि एक विश्वासी कैसे लोगों को मसीही के पास लाकर मनुष्यों के मछुवे का काम करता है।

कविता :पांच बच्चे रोमियों 8:35-39, पांच पद पढ़ें।

बड़े बच्चे इस कहानी के शब्द लेकर एक कविता या गीत लिखें

कंठस्थ करने के लिए पद : यूहन्ना 15:16।

प्रार्थना : ''हे परमेश्वर पिता, आपने शिष्य होने के लिए हमें चुना, आपका धन्यवाद। हम आपके आज्ञाकारी बनना चाहते हैं, और जैसी आपकी आज्ञा है अधिक फल लाना चाहते हैं। हमारी सहायता कीजिए कि हम आपकी बुलाहट का तुरन्त उत्तर दें और मनुष्यों को मछुवे बनना सीखें।''